

न्यारापन १८

१

सदा फरिश्ता अर्थात् देह-भान से न्यारा, निरहंकारी, देह-अहंकार के रिश्ते से न्यारा और बाप का प्यारा।

२

दूसरों की सद्गति करने पहले अपने को क्या फालो करना पड़ेगा ? याद की यात्रा भी किसलिये सिखाई जाती है। गुरु रूप से मुख्य फालो यही करना है अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना। याद की यात्रा भी इसलिये करते हैं कि साकार में रहते निराकार और न्यारे अशीररी हो रहे। जब अशरीरी बनेंगे तब ता गुरु के साथ जा सकेंगे। मुख्य रूप से तो यही फालो कर रहे हो और करना है।

३

चलते फिरते, बैठते, बातचीत करते पहली अनुभूति- यह शरीर जो हिसाब-किताब के वृक्ष का मूल तना है जिससे यह शाखायें

प्रगट होती हैं, यह देह और आत्मा रुपी बीज दोनों ही बिल्कुल अलग हैं। ऐसे आत्मा न्यारेपन का चलते फिरते बार-बार अनुभव करेंगे। नालेज के हिसाब से नहीं कि आत्मा और शरीर अलग हैं। लेकिन शरीर से अलग मैं आत्मा हूँ! यह अलग वस्तु की अनु-भूति हो। जैसे स्थूल शरीर के वस्त्र और वस्त्र धारण करने वाला शरीर अलग अनुभव होता है ऐसे मुझ आत्मा का यह शरीर वस्त्र है, मैं वस्त्र धारण करने वाली आत्मा हूँ। ऐसा स्पष्ट अनुभव हो। जब चाहे इस देह भान रुपी वस्त्र को धारण करें, जब चाहे इस वस्त्र से न्यारे अर्थात् देहभान से न्यारे स्थिति में स्थित हो जायें। ऐसा न्यारेपन का अनुभव होता है? वस्त्र को मैं धारण करता हूँ या वस्त्र मुझे धारण करता है। चैतन्य कौन? मालिक कौन? तो एक निशानी न्यारेपन की अनुभूति। अलग होना नहीं है लेकिन मैं हूँ ही अलग।

४

सेवा अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे। साधनों के आकर्षण में मन आकर्षित नहीं होना चाहिए। जब कर्मातीत अवस्था होनी है तो हर व्यक्ति, वस्तु, कर्म के बन्धन से अतीत होना, न्यारा होना इसको ही कर्मातीत अवस्था कहते हैं। कर्मातीत माना कर्म से न्यारा हो

जाना नहीं। कर्म के बन्धनों से न्यारा। न्यारा बनकर कर्म करना अर्थात् कर्म से न्यारे। कर्मातीत अवस्था अर्थात् बंधनमुक्त, योग-युक्त, जीवनमुक्त अवस्था!

५

अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे ही सर्व के प्यारे बन सकते हैं। जैसे बाप नाम रूप से न्यारे हैं तो सबसे अधिक नाम का गायन बाप का है - वैसे ही अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे बनो तो सदाकाल के लिए सर्व के प्यारे स्वतः बन जायेंगे। नाम और मान के भिखारीपन का अंशमात्र भी त्याग करो - ऐसे त्यागी विश्व के भाग्य विधाता बन सकते। कर्म का फल खाने के अभ्यासी ज्यादा हैं - इसलिए कच्चा फल खा लेते हैं - जमा होने अर्थात् पकने नहीं देते। कच्चा फल खाने से क्या होता है ? कोई न कोई हलचल हो जायेगी। ऐसे ही स्थिति में हलचल हो जाती है। कर्म का फल तो स्वतः ही आपके सामने सम्पन्न स्वरूप में आयेगा। एक श्रेष्ठ कर्म करने का सौ गुणा सम्पन्न फल के स्वरूप में आयेगा लेकिन

अल्पकाल की इच्छा मात्रम् अविद्या हो। त्याग करो तो भाग्य आपे ही आपके पीछे आयेगा। इच्छा - अच्छा कर्म समाप्त कर देती है। इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या। इस विद्या की अविद्या। महान ज्ञानी स्वरूप हैं - इसमें ज्यादा समझदार न बनना। यह होना ही चाहिए। मैंने किया, मुझे मिलना ही चाहिए - इसको इन्साफ न समझना। मेरा कुछ इन्साफ (न्याय) होना चाहिए। भगवान के घर में भी इन्साफ न हो तो कहाँ इन्साफ मिलेगा - कभी भी इन्साफ माँगने वाले नहीं बनना। किसी भी प्रकार के माँगने वाला स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं करेगा। तो सदा सर्व प्राप्तियों से तृप्त आत्मा बनो। ब्राह्मण जीवन का सलोगन है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु मास्टर सर्व शक्तिमान के खज़ाने में। यह सलोगन सदा स्मृति में रखो। अब गुह्य ज्ञान के साथ परिवर्तन भी गुह्य करो। मुश्किल लगता है क्या? अनेकों की मुश्किल को सहज करनेवाले हो सैलवेशन आर्मी हो।

७

न्यारे और प्यारे रहने का गुण वा निस्संकल्प रहने की जो विशेषता है इसी विशेषता से सर्व के प्रिय बन सकते, प्यारेपन से सबके दिल

का प्यार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। इसी विशेषता से सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

८

वैराग अर्थात् लगाव नहीं। सदा बाप के प्यारे। यह प्यारापन ही न्यारा बनाता है। बाप का प्यारा बन, न्यारा बन कार्य में आना - इसको कहते हैं बेहद का वैरागी। बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते, लगाव में आ जायेंगे। बाप का प्यारा और किसी व्यक्ति वा वैभव का प्यारा हो नहीं सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात् न्यारे होंगे। इसको कहते हैं निर्लेप स्थिति। कोई भी हृद की आकर्षण की लेप में आने वाले नहीं। रचना वा साधनों को निर्लेप होकर कार्य में लावें। ऐसे बेहद के वैरागी, सच्चे राजर्षि बने हो ? ऐसे नहीं सोचना कि सिर्फ एक वा दो कमजोरी रह गई है, सिर्फ एक सूक्ष्म शक्ति वा कर्मेन्द्रिय कन्ट्रोल में कम है, बाकी सब ठीक है। लेकिन जहाँ एक भी कमजोरी है तो वह माया का गेट है। चाहे छोटा, चाहे बड़ा गेट हो लेकिन गेट तो है ना। अगर गेट खूला रह गया तो मायाजीत जगतजीत कैसे बन सकेंगे ?

ऐसा अनुभव हो कि यह संस्कार व स्वरूप मेरा नहीं है, लेकिन मेरे पास्ट जन्म का था और अब है नहीं। मैं तो ब्राह्मण हूँ और यह तो शूद्रों के संस्कार व उनका स्वरूप है। ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरों के संस्कार हैं, ऐसा अनुभव होना—इसको कहा जाता है न्यारा और प्यारा। जैसे देह और देही अलग-अलग वस्तुयें हैं, लेकिन अज्ञानवश इन दोनों को मिला दिया है। वैसे ही मेरे को मैं समझ लिया है। तो इस गलती के कारण कितनी परेशानी व दुःख व अशान्ति प्राप्त की। ऐसे ही, यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं, लेकिन जो शूद्रपन के हैं, उनको मेरा समझने से, माया के वश व परेशान हो जाते हो अर्थात् ब्राह्मणपन की शान से परे (दूर) हो जाते हो। यह छोटी-सी भूल, चैक करो कि कहीं यह मेरे संस्कार तो नहीं था, यह कहीं यह मेरा स्वरूप तो नहीं? समझा? तो पहला पाठ, पवित्र-भव व योगी-भव को प्रैक्टिकल स्वरूप में लाओ, तब ही बाप-समान और बाप के समीप आने के अधिकारी बन सकते हो।